9

भाषा अध्यापन का सिद्धान्त

शिक्षण ⇒ शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक कम अनुभवी व्यक्ति और एक अधिक अनुभवी व्यक्ति के बीच ज्ञान, जानकारी, अनुभव का प्रवाह अधिक अनुभवी व्यक्ति से कम अनुभवी व्यक्ति के तरफ होता है।

- इस प्रवाह के लिए एक अत्यावश्यक माध्यम के रूप में कार्य करने वाले घटक शिक्षण सिद्धान्त, शिक्षण सूत्र, शिक्षण सहायक सामग्री और शिक्षण विधियाँ होते हैं।

- शिक्षण एक त्रि-आयामी प्रक्रिया है, जिसमें आयामों के रूप में अध्यापक, छात्र और विषय-वस्तु होते हैं।

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त ⇒

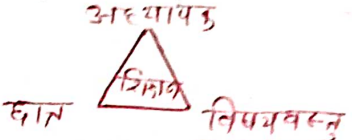

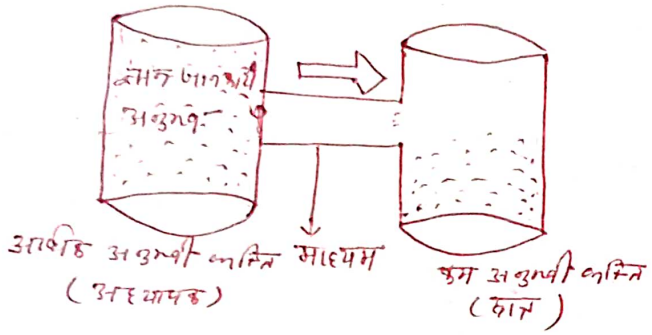

Principle of action

① क्रियाशीलता का सिद्धान्त ⇒ • इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य 'करके सीखना'।

- शिक्षार्थी जब करके सीखता है तब उसका ज्ञान स्थायी हो जाता है।
- यह सिद्धान्त शिक्षार्थियों में वास्तविक अवलोकन को बढ़ावा देता है।
- इस सिद्धान्त से शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान के लिए क्षमता का विकास होता है।
- शिक्षार्थी जितना ज्यादा क्रिया-कलापों में लिप्त होगा ज्ञान उतना ही बढ़ेगा।
- यह सिद्धांत शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष हस्तपरक अनुभव कराता है।
- इस सिद्धान्त से अधिगम सक्रिय एवं सार्थक होता है।
- इसमें शिक्षार्थियों में स्वयं सीखने, स्वअध्याय और अवलोकन कौशलों का विकास होता है।

principle of Interest

② रुचि का सिद्धान्त ⇒ • इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के प्रति रुचि पैदा करना। उनमें जिज्ञासा उत्पन्न करना।

- इसमें अध्यापक विभिन्न प्रकार के किस्से-कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ आदि को भाषा के अध्ययन में शामिल कर सकता है।
- इसमें शिक्षार्थियों का आमोद-प्रमोद होता है। [मन का वह [illegible] अवस्था जो किसी प्रिय [illegible] वस्तु के प्राप्त होने या कोई और [illegible] होता है।]
- इससे कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास होता है।
- इसलिए भाषा की कक्षा में भाषा शिक्षण को इस प्रकार की विषय-वस्तु का चयन करना चाहिए जिससे बालक को विषय नीरस न लगे।

principle of Inspiration, motivation

③ प्रेरणा, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त ⇒ • प्रेरणा किसी भी शिक्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु होता है। • अभिप्रेरणा वह सिद्धान्त है जो शिक्षण को लक्ष्य निर्देशित बनाता है।

- अभिप्रेरणा शिक्षार्थी को आंतरिक बल प्रदान करती है, जिससे वह निरंतर क्रियाशील बना रहता है। • इससे अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।

principle of planning
(4) नियोजन का सिद्धान्त ⇒ • इस सिद्धान्त के अन्तर्गत शिक्षण की एक योजना बनानी चाहिए, तत्पश्चात शिक्षार्थियों को अधिगम कराना चाहिए।

- इस सिद्धान्त के अन्तर्गत शिक्षार्थियों क्षमताओं, अंशतः योग्यताओं आदि का ध्यान रखना चाहिए।
- इस सिद्धान्त में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :— कार्य विश्लेषण, शिक्षण उद्देश्यों की पहचान, अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण

principle of stated goals
(5) निश्चित उद्देश्यों का सिद्धान्त ⇒

- इस सिद्धान्त के अन्तर्गत लक्ष्य निर्धारित अधिगम कराया जाता है।
- जब शिक्षार्थी को यह पता होता है कि उसके अधिगम का लक्ष्य क्या है तब वह रुचि के साथ अधिगम करता है।

principle of relate life
(6) जीवन से संबंधित करने का सिद्धान्त ⇒

- बाल मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो विषय एवं क्रियाएँ बच्चे के जीवन से संबंधित होती हैं, उन्हें बालक आनंदपूर्वक व आसानी से सीख लेता है।
- हिन्दी शिक्षण में शिक्षक गद्य, पद्य, कहानी, नाटक रचना, व्याकरण आदि का ज्ञान बच्चों को देता है।
- विद्यार्थी के दैनिक जीवन से संबंधित उदाहरण देकर आसानी से समझ लेते हैं।
- अतः बच्चों को उनके खेल-खिलौने, पशु-पक्षी, कथा-कहानी आदि से शिक्षण का संबंध बनाते हुए पढ़ाना चाहिए।

principle of individual difference
(7) व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त ⇒

- मनोविज्ञान व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षण देना चाहता है।
- इसमें सभी छात्रों की रुचि, बुद्धि, कार्य करने की क्षमता, एक जैसी नहीं होती।
- इसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से भिन्नता पाई जाती है।
- एक ही कक्षा में छात्रों के वैयक्तिक विभिन्नता पाई जाती है, कोई छात्र शुद्ध — (शिक्षार्थिन) उच्चारण नहीं करता, किसी को वाचन ठीक नहीं, किसी का लेख स्पष्ट नहीं होता, किसी की कठिनाई को नहीं, इसलिए अध्यापक को इन सबकी वैयक्तिक विभिन्नता एवं ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान करना चाहिए।
- छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाईयों का निवारण करना चाहिए।

principle of frequency, Repeat
(8) आवृत्ति का सिद्धान्त ⇒ • हिन्दी सिखने में आवृत्ति का बहुत बड़ा महत्व है।

- सीखी हुई बात को जितना अधिक दोहराया जाएगा, वह उतनी ही अधिक देर तक याद रहेगी।
- बच्चों को जो कुछ भी पढ़ाया जाए उसकी आवृत्ति उसी समय उसी दिन कर लेना चाहिए।
- कुछ विद्वान इस सिद्धान्त को "प्रयोग का सिद्धान्त" कहते हैं।

principle of teaching Maxims
(9) शिक्षण सूत्रों का सिद्धान्त ⇒ • शिक्षण के कुछ समान्य सूत्र हैं जिनके अनुसार शिक्षण कार्य करने से बच्चों को सीखने में सरलता, सुगमता और स्थायित्व प्राप्त होता है।

- जैसे - सरल से कठिन की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, विशिष्ट से समान्य की ओर, आगमन से निगमन की ओर,
- शिक्षण में इन सूत्रों के ~~कारण~~ आधार पर पालन करने से शिक्षण अधिक प्रभावशाली होता है।

(10). *principle of Association.*
साहचर्य का सिद्धान्त ⇒ • बच्चे दूसरे को सुनकर बोलना तो सीखते ही रहते हैं परन्तु इस प्रकार सीखे गये शब्दों को समझने के लिए साहचर्य का होना आवश्यक है।

• बच्चा माँ को माँ या मम्मी कहने के साथ पहचानना और समझना तभी सीख सकेगा जब शब्द (माँ) के उच्चारण के साथ स्वयं माँ को और पिताजी या पापा के उच्चारण के साथ स्वयं पिता को भी देखें।

• इस प्रकार शब्दोच्चारण और वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष दोनों का साथ-साथ अर्थात् साहचर्य होने से ही बच्चों को उस शब्द ~~आदि~~ की समझ और पहचान हो सकेगी।

• इसी प्रकार अन्य शब्द दूध, पानी, चिड़िया, कुत्ता, बिल्ली आदि को दिखाकर ~~उनका नाम~~ इन शब्दों को बोलने से वह इन शब्दों को समझने लगता है और इन वस्तुओं को देखकर उनका नाम उच्चारण करना सीख जाता है।

• यह सब सहचर्य के सिद्धान्त की ही महिमा है कि बच्चे आरम्भ में चित्र लिपि का ज्ञान भी अक्षर 'अ' की आकृति के साथ-2 अमरूद का भी साथ से बना हुआ देखते हैं।

Child principle of child centered
(11).. बालकेन्द्रिता का सिद्धान्त ⇒ • शिक्षण का केन्द्र बालक है।

• बालक की स्वभाव, क्षमता, रुचि स्तर आदि का ध्यान रखकर शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

principle of Colloquial theory
(12)- बोलचाल का सिद्धान्त ⇒ • भाषा शिक्षण की पुरानी पद्धति के अनुसार, कक्षा में अध्यापक आता था, पाठ को पढ़ाता था, धाराप्रवाह बोलता था, कक्षा का वातावरण शान्त हो, बालक मूक श्रोता बनकर सुनते थे, परन्तु अध्यापक सक्रिय और बालक बहरे, गूंगे जैसे बैठे हो, तो भाषा-शिक्षण कदापि प्रभावकारी नहीं होगा।

• इसी कारण आज के शिक्षा शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने बोलचाल के माध्यम से भाषा की शिक्षा पर बल दिया है। बोलचाल के शिक्षण में दो बातें मुख्य हैं:— 1. कानों द्वारा सुनना 2. मुंह द्वारा बोलना।

principle of Selection
(13)- चयन का सिद्धान्त ⇒ • हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए कब, किस सिद्धान्त या पद्धति का सहारा लिया जाए, इसकी सटीक जानकारी अध्यापक को होनी चाहिए।

• किसी पाठ को किस रूप में प्रस्तुत करके छात्रों को सरल एवं सहज ग्राह्य बनाया जाये।

⇒ पियाजे के अनुसार सभी बालक संज्ञानात्मक विकास के 4 चरणों से गुजरते हैं।

⇒ चॉम्स्की के अनुसार बच्चों में जन्मजात भाषिक क्षमता होती है, लेकिन जिन पियाजे ने इसका विरोध किया था।